युवमानस

गाथा

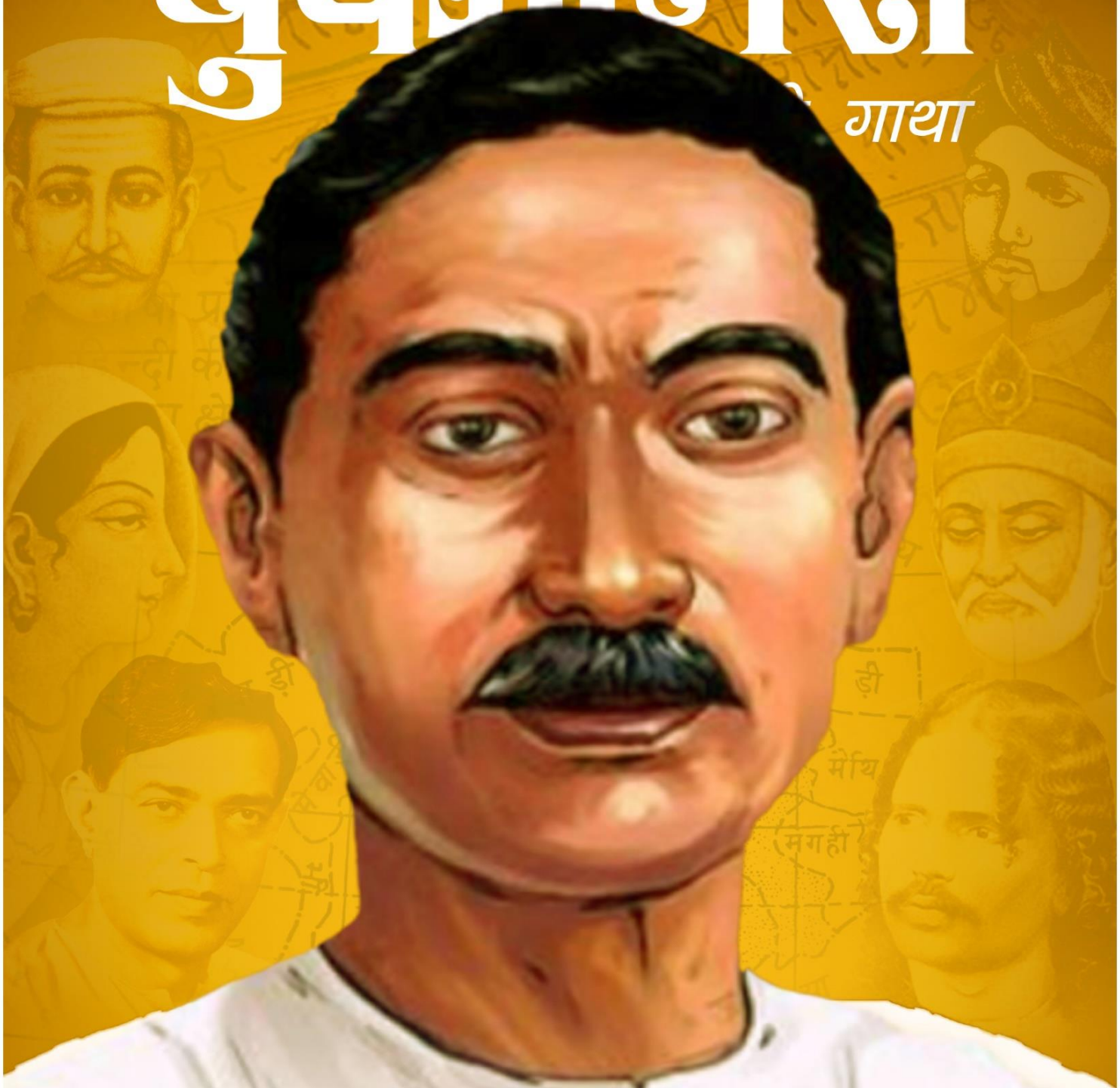

हिन्दी विशेषांक

जुलाई - सितंबर, 2024

खुशमानस

नवजन मन की गाथा

संपादक

संजय सोलोमन

उप-संपादक

आर्यबंत महाकुड़

सहयोग

सागर, ज्योति

पृष्ठ सज्जा

प्राची, परिधि, लक्ष्मी, तृप्ति, रिमी, संतोषी, कविता, संगीत एवं अन्य

हिन्दी विभाग

जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज

के छात्र समूह की त्रैमासिक दीवार पत्रिका की डिजिटल प्रति

विषय सूची

संपादकीय _____ 04

हिन्दी हैं हम _____ 06

संस्कृत से हिन्दी तक की यात्रा _____ 07

वैज्ञानिकता की कसौटी पर देवनागरी _____ 08

हिन्दी क्यों? _____ 09

आओ, हिन्दी को अपनाएं (कविता) _____ 10

हिन्दी है आत्मा की आवाज़ (कविता) _____ 10

हिन्दी दुर्दशा (कविता) _____ 11

हिन्दी के अनेक रंग (कविता) _____ 11

“

वही भाषा जीवित और जाग्रत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके और हिन्दी इसमें समर्थ है।

- पीर मुहम्मद मूनिस

संपादकीय

"सिर्फ़ भाषा रहने दो मेरी भाषा को"

प्रिय पाठकों,

भाषा अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। आदिम मनुष्यों ने अपने अनुभवों और मनोभावों को अपने समाज के साथ साझा करने के लिए आवाज़ें निकाली जो समयान्तर में व्यवस्थित होकर भाषा बन गई। विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर भिन्न-भिन्न भाषाएँ अस्तित्व में आई और संबंधित समाज की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग बन गई। हिन्दी भी इन्हीं में से एक है जो भारतीय आर्य संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हमारी त्रैमासिक पत्रिका 'युवमानस' का यह अंक हमने हिन्दी पर ही केंद्रित रखा है।

साथियों, भाषा सामाजिक संपत्ति होती है। इसका बनना-बिगाड़ना भी समाज के हाथों में होता है। भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जन सामान्य करती है। जन सामान्य की भाषा सहज, परिवर्तनशील और प्रवाहमयी होती है। यदि इसके प्रवाह को रोकने का प्रयास किया जाए तो यह दिशा बदल लेती है। आर्यों की भाषा वैदिक संस्कृत सहज हो कर लौकिक संस्कृत हुई। लेकिन जब लौकिक संस्कृत को व्याकरण और शास्त्रों में बांध कर देववाणी बनाया जाने लगा तो जनवाणी के रूप में पालि भाषा का उद्भव हुआ। जन सामान्य में पालि की लोकप्रियता देख अभिजात्य वर्ग ने भी इसे अपनाया और इसे शिष्ट बनाने का प्रयास किया। ऐसे में जनता की प्रवाहमयी भाषा प्राकृत भाषा के रूप में ढली। इसी तरह अपभ्रंश और फिर हिन्दी भाषा भी जन सामान्य की भाषा बन कर अस्तित्व में आई। पिछले हज़ार वर्षों में अनेक भाषाओं को राजाश्रय प्राप्त हुआ। अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी आदि लंबे समय तक राजभाषा बनी रही किन्तु हिन्दी के अस्तित्व को कोई क्षति नहीं पहुंची। यह आज भी जीवित है और लोकप्रिय भी। इसका कारण है कि अपने उद्भव से अब तक हिन्दी जन सामान्य की भाषा बनी हुई है तथा यह सहज परिवर्तन के प्रति उदार रही है।

सदियों तक हिन्दी जन मानस की सहज अभिव्यक्ति करती रही। इसमें साहित्य भी ख़ूब लिखा गया। क्योंकि हिन्दी के उद्भव से लेकर मध्यकाल तक अभिजात्य वर्ग की भाषा संस्कृत, अरबी, फ़ारसी आदि बनी रही इसलिए हिन्दी शिष्ट और क्लिष्ट होने के संकट से बची रही। इसी दौरान अरबी-फ़ारसी के शब्दों के समावेश से हिन्दी का एक नया रूप भी अस्तित्व में आया, जिसे हम उर्दू कहते हैं। केवल कुछ शब्दों के समावेश से कोई भाषा अलग नहीं हो जाती। यह भी हिन्दी का सहज विकास ही था, एक नई शैली के रूप में।

हिन्दी के अस्तित्व पर संकट अंग्रेजों के साथ आया। फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दुस्तानी भाषा विभाग के अध्यक्ष और एक विफल नील व्यपारी जॉन गिलक्रिस्ट ने हिन्दी को शुद्ध और शिष्ट करने के नाम पर भाषाई आधार पर भारत को बांटने की योजना बनाई। मुंशियों को हिन्दी में सहज ही आ गए अरबी-फ़ारसी के शब्दों को हटा कर उनके स्थान पर संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग करने का आदेश दिया गया। प्रतिक्रिया स्वरूप सहज उर्दू में भी तत्सम शब्दों के स्थान पर विदेशज शब्दों का आयात होने लगा। हिन्दी के लिए देवनागरी और उर्दू के लिए फ़ारसी लिपि तय कर दी गई। हिन्दी को क्लिष्ट बना कर जन सामान्य से दूर करने की यह पहली बड़ी घटना थी।

इसके पश्चात जब राष्ट्रीय एकता के लिए एक संपर्क भाषा की बात चली तो इसके लिए खड़ी बोली हिन्दी को चुना गया। लक्ष्मण सिंह और अन्य इसके संस्कृत निष्ठ रूप के पक्षधर थे तो सर सय्यद आदि अरबी-फ़ारसी बहुल रूप के। शिवप्रसाद सितारे-हिन्द ने जन सामान्य के भाषा रूप को समर्थन दिया था किन्तु ऐसा हुआ नहीं। साहित्य और पत्रिकारिता में संस्कृत निष्ठ हिन्दी को प्रतिस्थापित करने के प्रयास होने लगे। भाषा के सहज प्रवाह को रोक कर उससे उल्टी दिशा में मोड़ा जा रहा था। किन्तु इस भाषा को कभी सामान्य वर्ग की स्वीकृति नहीं मिली।

जो विदेशज शब्द सदियों से जनता के व्यवहारिक भाषा में घुल मिल गए थें उन्हें हटा कर हजार साल पीछे छूट चुके तत्सम शब्दों को स्थान देना संभव नहीं था। दरवाज़ा, पानी, ज़िंदगी, ग़लत, चश्मा, सब्ज़ी, औरत, आदमी जैसे अनेक शब्द हैं, जिन्हें समूची जनता के अभ्यास में प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता था। परिणाम यह हुआ कि हिन्दी की दो धारा समानांतर बहने लगी। एक सामान्य वर्ग की सहज हिन्दी और दूसरी अभिजात्य वर्ग की क्लिष्ट हिन्दी। वर्षों तक क्लिष्ट हिन्दी में साहित्य भी रचा गया किन्तु जब उनकी भाषा जन मानस तक नहीं पहुंची तो साहित्यकारों ने पुनः सहज हिन्दी का दामन थामा।

अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के बाद हिन्दी को राजभाषा बनाया गया। इसी के साथ भाषाई राजनीति भी शुरू हुई। दक्षिण में द्रविड भाषाएं बोली जाती है, वहाँ हिन्दी का प्रभाव बहुत कम था। इसलिए अंग्रेजी भी राजभाषा के रूप में बनी रही। समयान्तर में विभिन्न संशोधनों के तहत हिंदीतर भाषाओं को भी संघ की राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। किन्तु राजस्थानी, भोजपुरी, गढ़वाली समेत कई भाषाओं को हिन्दी की बोली कह कर राजभाषा होनी से वंचित कर दिया गया। मैथली का क्षेत्र छोटा होने के बाद भी उसके साहित्य को देख कर उसे भाषा का दर्जा दे दिया गया। राजस्थानी और भोजपुरी का भी साहित्य बहुत समृद्ध है। दोनों का व्यवहार क्षेत्र भी बहुत व्यापक है। भोजपुरी का अपना सिनेमा उद्योग भी है। गढ़वाली तो हिन्दी के अन्य बोलियों से बहुत दूर है। किन्तु इन्हें हिन्दी भाषा के अंतर्गत ही उसकी बोलियों में गिना जाता है। जब राजस्थानी और भोजपुरी को राजभाषा बनाने की माँग उठी तो इसे अस्वीकार करने के लिए भी कई लोगों द्वारा पत्र भेजे गए। इसके पीछे की राजनीति यह है कि इन दोनों का क्षेत्र हिन्दी के कुल क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा है, यदि इन्हें अलग भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ तो दस्तावेजों में हिन्दी का क्षेत्र और संकुचित हो जाएगा। इसके इतर हिन्दी को पूरे भारत में फैलाने के भी प्रयास हो रहे हैं। अपनी भाषा को सम्मान देना और उसका प्रसार करना सही है किन्तु अपनी भाषा को थोपना ग़लत है। संथाल क्षेत्र में बांग्ला का प्रसार सहज ही हुआ किन्तु बांग्लादेश में उर्दू थोपा गया था। प्रचार-प्रसार करने और थोपने के मध्य की रेखा को स्पष्ट रखना आवश्यक है यदि वह धुंधली पड़ने लगी तो देश की सामाजिक और संस्कृति एकता भंग होने लगेगी। यह राजनीति राजभाषा के साथ ही हो सकती, लोकभाषा के साथ नहीं। जन सामान्य की भाषा को काग़ज़ पर मोहर लगा कर बदला नहीं जा सकता।

हमारी हिन्दी यानी सामान्य जनता की हिन्दी आज भी प्रवाहमयी, परिवर्तनशील और सहज है और जनता होने की हैसियत से मैं भाषाई राजनीति करने वालों और कलावादी साहित्यकारों से केदारनाथ सिंह के शब्दों में कहता हूँ 'सिर्फ़ भाषा रहने दो मेरी भाषा को'।

– संजय सोलोमन (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

“

मेरा अनुरोध है / भरे चौराहे पर करबद्ध अनुरोध / कि राज नहीं – भाषा / भाषा-भाषा-सिर्फ़ भाषा रहने दो / मेरी भाषा को।

- केदारनाथ सिंह

हिन्दी हैं हम

हिन्दी आज भारत में सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा है। 2011 की भारत के जनगणना के अनुसार 43.63% भारतीयों ने हिंदी को ही अपनी मातृभाषा बताया है। सदियों से हिन्दी जन और साहित्य दोनों की भाषा बनी हुई है। अब तो यह भारत की एक राज भाषा भी है। हिन्दी, विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक, संस्कृत की परंपरा से आती है। भारत में आज सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। यह हमारी राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। 2011 की भारत के जनगणना के अनुसार 43.63% भारतीयों ने हिंदी को ही अपनी मातृभाषा बताया है। सदियों से हिन्दी जन और साहित्य दोनों की भाषा बनी हुई है। भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने इसे पहली राजभाषा भी घोषित कर दिया।

हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र बहुत व्यापक है। हिन्दी की 5 उप-भाषाएँ हैं जिसके अंतर्गत 17 से अधिक बोलिया मानी जाती है। पूर्वी हिन्दी में अवधि, बघेली, छत्तीसगढ़ी आदि पश्चिमी हिन्दी में ब्रजभाषा, खड़ीबोली, हरियाणवी, बुन्देली आदि, बिहारी हिन्दी में भोजपुरी, मगही, मैथिली आदि, राजस्थानी हिन्दी में मारवाड़ी, मेवाती, जयपुरी आदि तथा पहाड़ी हिन्दी में गढ़वाली आदि प्रमुख बोलियाँ है। हिन्दी व्यवहारिक क्षेत्र पंजाब से पंजाब से तेलंगाना तथा झारखंड से राजस्थान तक फैला हुआ है। राजभाषा बनने के बाद तथा हिन्दी फिल्मों के मध्यम से इसका विस्तार पूरे भारत में हो रहा है।

हिन्दी के लगभग हज़ार वर्षों के इतिहास में विभिन्न कवियों ने इसे अपनाया और इसे समृद्ध बनाया। खुसरों ने लोक विधाओं के मध्यम से तो विद्यापति ने गीतों के द्वारा हिन्दी को लोकप्रिय किया। दरबारी कवियों ने इसे दरबारों में स्थान दिलाया तो सिद्ध, जैन और नाथों ने इसे मत प्रचार का माध्यम बनाया। सूर, तुलसी की सहज भक्ति की भाषा हिन्दी ही थी। कबीर ने समाज सुधार के लिए हिन्दी को ही अपनाया। सूफियों ने भी प्रेम के प्रसार के लिए इसी भाषा को चुना। बिहारी, घनानन्द आदि ने हिन्दी को रस-अलंकार से सजाया। जब देश ग़ुलाम हुआ, तो भारतेन्दु, द्विवेदी, गुप्त आदि ने इसे ही राष्ट्रिय एकता का माध्यम बनाया। महादेवी की संवेदना, दिनकर की राष्ट्रीयता, नागार्जुन का व्यंग्य तथा दुष्यंत की क्रांति हिन्दी में ही अभिव्यक्त हुई। प्रेमचंद, प्रसाद, भीष्म ने हिन्दी में ही कथाएं गढ़ी। आज भी साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी निरंतर विकास कर रही है और अंतरराष्ट्रीय साहित्य में स्थान भी सुनिश्चित कर रही है।

बोलचाल की हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी का एक समृद्ध इतिहास रहा है। आज कार्यालयी हिन्दी भी अंग्रेजी को प्रतिस्थापित करने में लगी हुई है। अनुवाद पर भी निरंतर काम हो रहे हैं। भारतीय गणतंत्र के प्रतिनिधि अंतरराष्ट्रीय मंचों में अपनी बात हिन्दी में रख रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी भारत की एक प्रमुख और समृद्ध भाषा है जो विश्व में अपना लोहा मनवा रही है।

– ज्योति कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

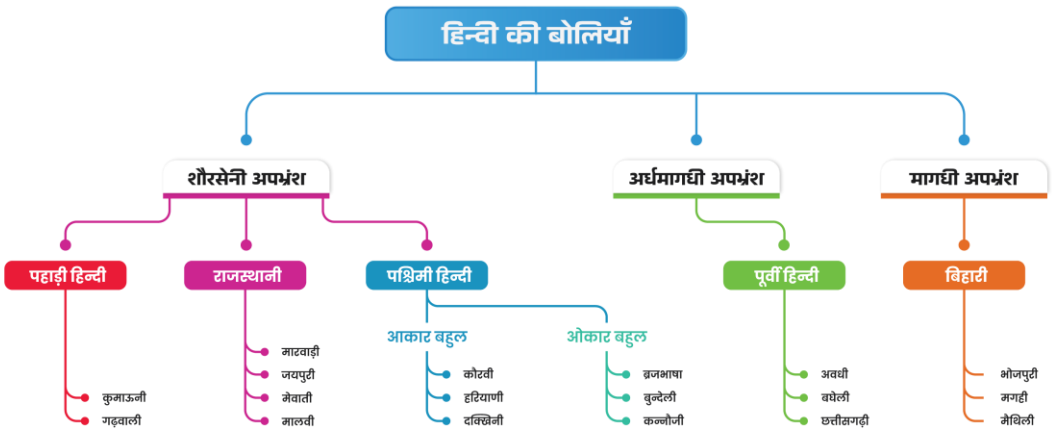

संस्कृत से हिन्दी तक की यात्रा

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ द्रविड़, भारोपीय, चीनी तिब्बती, ऑस्ट्रो-एशियाई आदि भाषा परिवार के अनेक भाषाएं बोली जाती हैं किन्तु इनमें हिन्दी का विशेष स्थान है। हिन्दी का संबंध भारोपीय भाषा परिवार से है। भारोपीय भाषा परिवार से भारत-ईरानी भाषाएं निकाल कर आती है, जिसकी तीन शाखाएं हैं- ईरानी, दरद और भारतीय आर्यभाषा। भारत में आर्यों के साथ भारतीय आर्यभाषा (जिसे वे स्वयं संस्कृत कहते थें) का प्रवेश हुआ। यहाँ से एक भारतीय आर्यभाषा की विकास यात्रा आरंभ होता जो हमें हिन्दी तक पहुँचाती है।

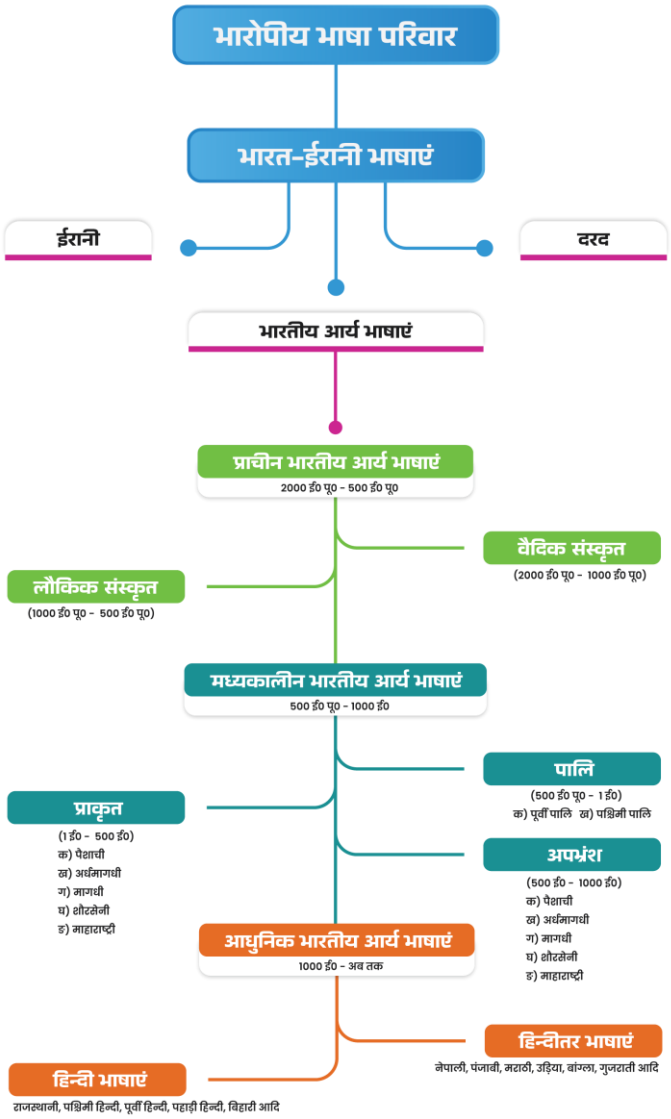

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का काल 1500 ई०पू० से 500 ई०पू० तक माना जाता है। भारतीय आर्यभाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत (1500 ई०पू० से 1000 ई०पू०) में मिलता है, जिसमें ऋग्वेद की रचना हुई। भाषा के सरलीकरण के साथ इसके बोलचाल का रूप अस्तित्व में आता है, जिसे लौकिक संस्कृत (1000 ई०पू० से 500 ई०पू०) कहते हैं। वाल्मीकि रामायण इसी भाषा रूप में लिखा गया।

500 ई०पू० से 1000 ई० तक को मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा कहा जाता है। जब लौकिक संस्कृत क्लिष्ट हो गई तो जन भाषा के रूप में पाली भाषा (500 ई०पू० से 1 ई०) का उदय हुआ। बौद्ध ग्रंथ लिखे जाने के साथ यह भाषा भी क्लिष्ट हो गई। तब प्राकृत भाषा (1 ई० से 500 ई०) बोलचल की भाषा बनकर उभरती है। समयांतार में जब प्राकृत भी जैन कवियों की भाषा बनती है तो यह भी शिष्टता का दामन थामने लगती है। ऐसे में जनता फिर एक नई बोलचाल की भाषा विकसित करती है जिसे अपभ्रंश भाषा (1500 ई०पू० से 500 ई०पू० तक) कहा जाता है। धार्मिक काव्य से लेकर राजप्रशस्ति परक काव्य तक अपभ्रंश भाषा में लिखा गया।

यहीं से आधुनिक भारतीय आर्यभाषा का उदय होता है। विभिन्न क्षेत्रों के अपभ्रंश से पुरानी हिन्दी के विभिन्न रूपों का विकास होता है। हिन्दी किसी भाषा विशेष की संज्ञा नहीं है बल्कि हिन्द में बोली जाने वाली भाषा का द्योतक है। अपभ्रंश से विकसित होने वाली विभिन्न बोलियाँ जैसे अवधि, ब्रज, बुन्देली आदि ही हिन्दी है। खड़ी बोली भी हिन्दी की एक बोली है। अतः हिन्दी का विकास प्राचीतम भारतीय आर्यभाषा यानि वैदिक संस्कृत से हुआ है और अपने विकास क्रम में यह अन्य भाषाओं के संपर्क से भी प्रभावित होती चली गई।

– परिधि कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

वैज्ञानिकता की कसौटी पर देवनागरी

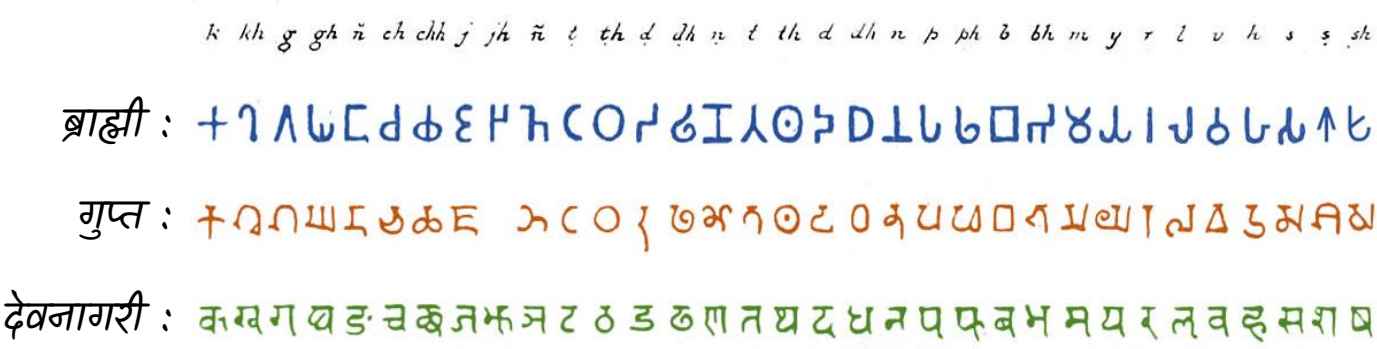

देवनागरी उत्तर भारत की प्रमुख लिपि है। इसका उद्भव 8वीं-9वीं शताब्दी के आसपास ब्राह्मी लिपि के विकास क्रम में कुटिल लिपि हुआ था। भारत के संविधान में इसे संघ की लिपि का दर्जा प्राप्त है। इसमें ऐसी कई विशेषताएँ हैं जिसके कारण इसे आदर्श और वैज्ञानिक लिपि के समीप भी देखा जाता है।

देवनागरी लिपि में ध्वनियों को स्वरों और व्यंजनों को अलग रखा गया है। स्वरों में हस्व और दीर्घ के युग्म हैं, जिससे अक्षरों का अधिक स्पष्टता के साथ लिखा जा सकता है। जैसे 'पता' और 'पाता' को मात्रा के प्रयोग से भिन्न प्रकार से लिखा जाता है किन्तु रोमन में दोनों के लिए 'PATA' ही लिखा जाएगा। इसमें व्यंजनों का वागींद्रियों (कंठ, तालू, दन्त, मूर्धा, ओष्ठ आदि) के आधार पर सुव्यवस्थित वर्गीकरण है। प्रत्येक वर्ग की प्रथम, तृतीय एवं अंतिम ध्वनियां अल्पप्राण ध्वनि (क, ग, ङ) तथा द्वितीय एवं चतुर्थ ध्वनि महाप्राण ध्वनि (ख, घ) है। अंतिम ध्वनि को अनुनासिक (ङ) रखा गया है। अक्षरात्मक लिपि होने के कारण देवनागरी में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक भिन्न चिह्न है, अतः जो उच्चारण हो वही लिखा जाता है तथा जो लिखा जाता है वही उच्चारित होता है। उदाहरण के लिए अरबी में 'बिल्कुल' को 'بالكل' (बालकुल) लिखा जाता है, रोमन में 'नाइट' को 'Knight' लिखा जाता है किन्तु यह दोष देवनागरी में नहीं है। रोमन में But और Put में u का उच्चारण क्रमशः ा और ु है किन्तु देवनागरी में एकरूपता है, प्रत्येक वर्ण का प्रयोग सदैव निश्चित ध्वनि के लिए ही होता है। रोमन में 'क' ध्वनि के लिए K, C, Q आदि का प्रयोग होता है, उर्दू में ज़ के लिए ز، ذ، ژ، ض، ظ आदि का प्रयोग होता है किन्तु देवनागरी में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक वर्ण निश्चित है। इसमें विदेशज शब्दों के साथ आई ध्वनियों को समाहित करने की भी क्षमता है। अरबी के क़, ख़, ग़, फ़, ज़ तथा अंग्रेजी का ऑ को देवनागरी में स्थान मिल गया है। इसकी शिरोरेखा के कारण इसमें लिखें शब्द और भी अधिक सुंदर एवं व्यवस्थित नजर आते हैं।

देवनागरी लिपि में अनेक विषाशताएं हैं किन्तु यह लिपि भी दोषरहित नहीं है। इसके विकास क्रम में तथा प्रेस के आने के बाद से इसके मानकीकरण की समस्याएं आने लगी। एकरूपता का अभाव नजर आने लगा। उदाहरण के लिए 'र' को विभिन्न रूपों में लिखा जाता है, जैसे रात, प्रतीक, राष्ट्र, कर्म आदि। पंचमवर्णों के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग किया जा रहा है जैसे हिन्दी के लिए हिंदी, खण्डन के लिए खंडन आदि। इससे 'हँस' और 'हंस' का अंतर अस्पष्ट हो गया। इस दोष को दूर करने के लिए चंद्र बिन्दु का प्रयोग किया जाता था किन्तु अब नहीं होता।

अतः देवनागरी एक सुव्यवस्थित लिपि है जो कई हद तक वैज्ञानिक भी है। इसमें कई विशेषताएं है तो कुछ दोष भी हैं। भारत में यह कई भाषाओं को लिखित अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

– तृप्ति रानी बेरा (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

हिन्दी क्यों ?

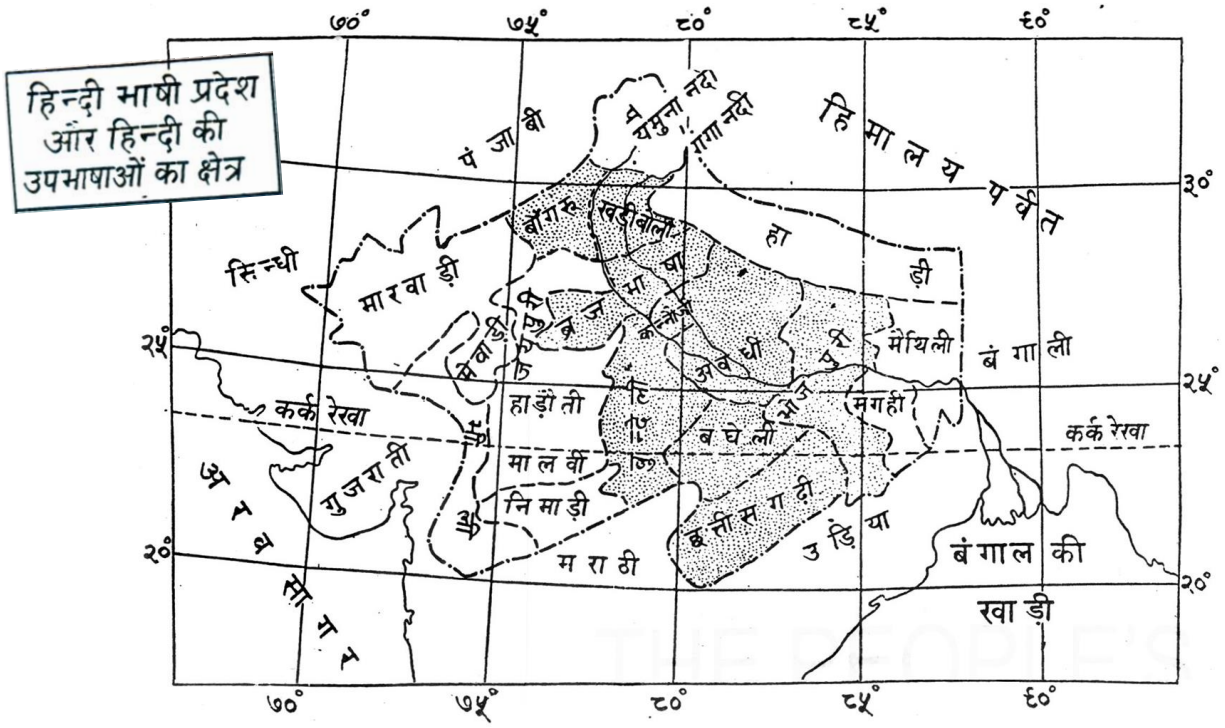

यद्यपि संवैधानिक रूप से कहीं भी इस बात की चर्चा नहीं है कि किसी भाषा को राष्ट्रभाषा कहा जाए किन्तु व्यावहारिक रूप से हिंदी को ही संघ की राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त है। जनभाषा के रूप में हिन्दी का एक समृद्ध इतिहास रहा है। पिछले 1000 वर्षों से हिन्दी जनता की भाषा बनी हुई है और भाषा वही जीवित रहती है जो लोक में संरक्षित रहती है। आज अगर हम इसकी व्यावहारिकता की बात करें तो आज भी भारत के कई प्रदेशों में हिंदी बोली जाती है, सुनी जाती है किन्तु जब बात इसके पठन-पठान की आती है तो इसे लेकर लोगों में एक झिझक देखने को मिलता है। लोग हिन्दी पढ़ने या हिन्दी में पढ़ने -पढ़ाने में संकोच करते हैं। और जब तक झिझक के इस बंधन को नहीं तोड़ा जाएगा तब तक वास्तविक रूप में हिंदी को पूर्णतः व्यवहार में नहीं लाया जा सकता। किन्तु इस क्रम में यह सवाल आता है कि हिंदी पढ़ने या पढ़ाने का उद्देश्य क्या है? अन्य विषयों या भाषाओं को पढ़ने का कहीं ना कहीं कोई उद्देश्य सुनिश्चित है परंतु हिंदी पढ़ने का क्या उद्देश्य है?

आज के युग में रोजगार एक बड़ी समस्या है, लेकिन क्या नौकरी पाना ही हिन्दी के पठन-पाठन का एकमात्र उद्देश्य है? अभी की स्थिति से ऐसा ही लग सकता है किन्तु हिन्दी में इससे कई अधिक संभावनाएं हैं। हिन्दी सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में जोड़ सकती है जैसे स्वतंत्रता आंदोलन के समय पत्र-पत्रिकाओं के मध्यम से किया गया था। साहित्य के क्षेत्र में भी लोग हिंदी का अर्थ कविता, कहानी, उपन्यास आदि तक सीमित कर देते हैं किन्तु जैसे-जैसे इस क्षेत्र में काम हो रहा है वैसे हिंदी की दुनिया भी बहुत बड़ी होती जा रही है। वर्तमान समय की बात करें तो हिंदी में बहुत अच्छा लिखा एवं पढ़ा जा रहा है। हिंदी सभी क्षेत्रों में अपनी मौजूदगी सुनिश्चित कर रही है। हिंदी में सभी भाषाओं को समेटने की भी अद्भुत क्षमता है। परंतु सवाल फिर भी जस का तस है कि क्या इसका उद्देश्य सिर्फ डिग्री या नौकरी प्राप्त करना है? यह इसका एक पक्ष जरूर हो सकता है परंतु एकमात्र नहीं। अतः हमें सबसे पहले इसके पठन-पाठन के अन्य संभावनाओं को स्पष्ट करना आवश्यक है ताकि हिंदी को केवल पूंजी लाभ की दृष्टि से न देखा जाए बल्कि इसके सांस्कृतिक पहचान को भी समझा जाए। ऐसे होने से ही हिन्दी का सम्पूर्ण विकास संभव है ।

– आर्यबंत महाकुड़ (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

आओ, हिंदी को अपनाओ

हिंदी सबसे प्यारी ज़ुबाँ,
इसके जैसा कोई कहाँ।
कभी है कड़क, कभी है नरम,
हर बात में इसकी है दम।

चाय पे हो चर्चा भले,
हिंदी में ही तो सब कहे।
सुबह का कोई समाचार,
हिंदी में ही होता प्रसार।

गली-मोहल्ले की कहानी,
हिंदी में है सबसे पुरानी।
दोस्तों के भी सारे जुगाड़,
हिंदी में होते हैं तैयार।

दुनिया के हर झंझट से दूर,
हिंदी में मिले प्यार भरपूर।
माँ की डाँट भी लगती प्यारी,
इतनी मधुर हिंदी हमारी।

प्यार का इज़हार हो या लड़ाई,
हिंदी में ही आती है सच्चाई।
कभी किचकिच, कभी तकरार,
हिंदी में ही बसता है प्यार।

तो आओ, हिंदी को अपनाओ,
इसके रंग में रंग जाओ।
हिंदी दिवस पर यही है कहना,
हिंदी से ही है जीना-मरना!

– सागर शॉ (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

हिंदी है आत्मा की आवाज़

हिंदी है आत्मा की आवाज़
हिंदी है आत्मा की आवाज़,
जिसमें बसती हैं अनगिनत आवाज़ें।
यह भाषा नहीं, हमारे अस्तित्व का सार,
इसके बिना जीवन अधूरा, बेज़ार।
गंगा की तरह यह प्रवाहित,
हर शब्द में अमृत समाहित।
हर अक्षर में छिपी एक दुनिया,
हिंदी से है हमारी पहचान,
इसमें बसा है पुरखों का मान।
यह मात्र भाषा नहीं,
यह है भावनाओं का सागर,
जिसकी लहरों में छिपे अनगिनत विचार।
इसके साहित्य में मिलता है जीवन का दर्शन,
कभी प्रेम, कभी करुणा, कभी संघर्ष का वर्णन।
यह मात्र संप्रेषण का माध्यम नहीं,
यह है आत्मा का प्रतिबिंब,
जिसमें झलकता है इंसान का सच्चा रंग।
आओ, इसे और समृद्ध करें,
इसकी गहराई को समझें और संजोएं।
हिंदी है वह जड़,
जिससे उगा है हमारा वट वृक्ष।
इसकी जड़ों में छिपा है हमारे वजूद का रहस्य,
इसकी छांव में मिलता है जीवन का विश्राम।
हिंदी से है हम, हिंदी से हिंदुस्तान,
आओ, इसे करें समर्पित अपना सम्मान।
हर दिल में बसाएं इसकी गहराई,
इससे ही मिलती है हमारे जीवन की सच्चाई।

– रिमी कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

हिन्दी दुर्दशा

भारत की पहचान है हिन्दी, पर होती अपमानित,
अपनों के ही बीच में अक्सर, क्यों रह जाती वंचित?
बनकर देश की धड़कन, बनकर संस्कारों का किस्सा,
क्यों भूल जाते हैं इसको, हर पीढ़ी का हिस्सा?

अंग्रेज़ी की भाग-दौड़ में, खो गई है हिन्दी कहीं,
अपनी ही जड़ों से आखिर, कट जाना तो सही नहीं।
शहरों में खोई खोई है, गाँवों में भी धुंधली है,
अपनों से ही दूर होकर, अब ये बिल्कुल अकेली है।

संस्कृतियों का संगम हिन्दी, यह भारत की शान है,
हिन्दी में छुपा हर रंग, हर इक बात महान है।
पर फिर भी क्यों ये भाषा, हो रही दिलों से दूर है,
वैचारिक गुलामी से शायद हम सब मजबूर हैं।

आओ, मिलकर इसे संभालें, अगर ज़रा भी प्यार है,
दे दें इसे वही सम्मान, जो इसका अधिकार है।
हिन्दी को फिर से बसा दें, हिन्दी भाषियों के मन में,
तभी बनेगा भारत उन्नत, एकता होगी जन-जन में।

– शमा सानिया (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

हिन्दी के अनेक रंग

हिन्दी के आँगन में जाने कितने रंग समाए हैं,
बोली-बानी की धारा में अनगिनत गीत आए हैं।
बृजभाषा की मिठास है, अवधी का सरल सिंगार है,
बुंदेली के बोलों में तो वीरता का है प्रहार है।

राजस्थानी की रंगीनी, गढ़वाली का प्यार भी,
भोजपुरी की सरलता, खड़ी बोली का विस्तार भी।
हर कोने की बोली-बानी, हिन्दी का ही है एक रूप,
सब मिलकर ही सजाते हैं, इसके अक्षरों का स्वरूप।

हिन्दी साहित्य के महासागर में कितने ही हैं रत्न छुपे,
अमीर, कबीर, प्रेमचंद, दिनकर, शब्द-शब्द में अर्थ रचे।
दुष्यंत की क्रांति है हिन्दी, तो महादेवी का श्रृंगार,
नागार्जुन की शब्द ज्वाला में छिपा विचारों का संसार।

आओ मिलकर इसे बढ़ाएं और समृद्ध बनाएं,
इसके हर स्वर को आओ, हम दिल से अपनाएं।

– संतोषी कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 2)

> भाषा का निर्माण सेक्रेटरियट में नहीं होता, भाषा गढ़ी जाती है जनता की जिह्वा पर, जनता के दिल में।
>
> **- रामवृक्ष बेनीपुरी**

> भाषा वही जीवित रहती है, जो अपने समाज को जीवंत बनाए रखे।
>
> **- महादेवी वर्मा**

“

भारत के युवक और युवतियां अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएं खूब पढ़ें, मगर मैं हरगिज यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचे से ऊंचा चिन्तन नहीं कर सकता।

- महात्मा गांधी

हमारी त्रैमासिक दीवार पत्रिका ‘युवमानस’ के अन्य अंकों की डिजिटल प्रति प्राप्त करने हेतु

क्लिक करें

या स्कैन करें